REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

कितने पाकिस्तान में राजनीतिक चेतना

प्रा. डॉ. अनुप सहदेव दळवी
रा.ब.ारायणराव बोरावके महाविद्यालय, श्रीरामपूर, जि.अहमदागर.

विश्व मानवता की अलगाव की राजनीति का नग्न चित्र 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के माध्यम से कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया है। यह केवल मानव मूल्यों की त्रासदी न होकर समुची मानवता के विघटन की त्रासदी है। आज विश्व में युध्द, साम्प्रदायिकता, पृथकतावाद, आंतकवाद, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, रंगभेद, वर्गभेद की निर्मित समस्याओं ने मानव अस्तित्व को खतरा पैदा किया है। विश्व के देशों में अपनी शक्ति प्रदर्शन के लिए शस्त्र निर्मिति की प्रतियोगिता के कारण खतरों का दायरा फैल रहा है। समाज में भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था के कारण शोषक और शोषित समाज की खाई दिन-ब-दिन चौंडी हो रही है। परिणामत: शोषित समाज की दरिद्रता, बेकारी, भूखमारी, भिक्षा वृत्ति, यौन व्यभिचार, बलात्कार और रूग्ण मानसिकता के कारण उनका जीवन असह्य हुआ है। राजनेताओं ने धर्म का विभाजन अपनी स्वार्थ लिप्सा के लिए किया है। राजनेता कभी जाति के नाम पर तो कभी धर्म के नामपर लोगों में अलगाव पैदाकर अपनी खूर्ची हासिल करते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ.नवीनचन्द्र लोहनी ने लिखा है-"इतिहास गवाह है मनुष्य ने सदा धर्म को राजनीति का मोहरा बनाकर सत्ता प्राप्ति के लिए एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है, चाहे मुगल शासक हो या फिर अंग्रेज। हमेशा सत्ता प्राप्ति के लिए घृणित चालें चलते रहें, जो आज की लोकतान्त्रिक व्यवस्था में देश स्वतंत्र हो जाने के बाद भी जारी है।"[५८] लोगों की धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर, कभी भड़काकर सत्ता प्राप्ति की अदम्य लालसा के अनेक उदाहरण कमलेश्वर ने प्रस्तुत उपन्यास से उद्धृत किये हैं।

'कितने पाकिस्तान'उपन्यास में कमलेश्वर ने साम्प्रदायिक राजनीति की पोल खोलकर उसके दुष्परिणामों को सामने रखा है। उन्होंने टूटी मानसिकता को जोड़कर मानवीयता धर्म की स्थापना की है। लोगों में साम्प्रदायिक भावना प्रधान होने पर मानवीय भावनाओं का लोफ हो जाता है। गांधीजी आजाद भारत को अखण्ड रखना चाहते थें, परतुं स्वार्थान्ध नेताओं ने साम्प्रदायिकता का जहर समाज में फैलाकर अलगाव पैदा किया है। गांधीजी भारत-पाक विभाजन की खबर सुनकर व्यथीत हो जाते हैं-"एक अधेड़ खद्दरधारी ने आकर सूचना दी-बापू। विभाजन हो गया है..गांधीजी ने गहरी साँस ली। अपना थका पैर खश्च लिया। फिर सुखे गले में एक घूँटसा लेकर उन्हें सद्बुध्दि ।"[५९] भारत-पाक विभाजन के समय अगणित निरापराध लोगों को मौंत के घाट उतार दिया गया हैं। कारण स्पष्ट है गलत फैसलों से हिंसा उपजती है और हिंसा से अपसंस्कृतियों का संस्कार होता है। रक्तपात होकर विशुध्द मानवीयता जन्म लेती है। राजनीतिक लोगों की कुटनीति का पर्दाफाश करते हुए उपन्यास में चित्रित शीतलासिंह कहते हैं-"बस आग लगाते घूम रहे हैं सब..ई नाही सोचते कि भारत का का होगा।पहले हिंया हिन्दू-मुसलमान कौ लड़वाना चाहा, नाहीं लड़वाय पाएं तो अब शिया-सुन्नी को लड़वाना चाहते हैं.. ।"[६०] युध्दों के इन भयानक परिणामों को कमलेश्वर ने अपने उपन्यास में मुद्दा बनाया है। वे विनाशकारी युध्द का विरोध करते हैं। युध्द की विभीषिका की भयानकता का प्रतिपादन करते हुए वे समस्त मानवता से

प्रश्न करते हैं-"क्या एक जीवित रहते के लिए दूसरे की मौत जरूरी है..सारे युध्द महायुध्द यही तो बताते हैं कि मौत के योगफल के आधार पर ही हार-जीत तय हो जाती है, तुम कितनी मौत दे सकते हो, वह कितनी मौत उठा सकता है। जब तक पहला जीवित रहता है पहला नहीजीतता। मौत ही जय-पराजय को तय करती है।"[६१] आज मानव अपनी स्वार्थी और संकीर्णतावादी प्रवृत्ति के कारण स्वयं ही अपने लिए कब्र खोद रहा है और मानवीय संवेदना समाप्त होती जा रही है। युध्द से उत्पन्न संवेदन-शून्यता और क्रूर अमानवीय वृत्ति प्रोत्साहित

होकर मनुष्य पशुवत व्यवहार करने लगा है।

भारत-पाक विभाजन के बाद स्वार्थान्ध राजनेताओं ने अपने धर्मों तथा जातियों में भेदभाव, द्वेष, घृणा के भाव निर्माण किए। इतना ही नही उन्होंने केवल धर्म तथा जातियों के बीच भेदभाव निर्माण नही किए, बल्कि मनुष्य-मनुष्य के बीच भी भेदभाव तथा नफरत का भाव पैदा किया है। इसीलिए राजनीतिक कूटनीति का प्रतिपादन करते हुए अल्ताफ हुसैन तमककर बोलता है-"पाकिस्तान हमने बनाया है। इन पंजाबियों, बलूचों, सिंधियों और पख्तूनों ने नहश। पाकिस्तान बनाने की कीमत हम अवध और बिहार के मुसलमानों ने चुकाई हैं..असली पाकिस्तानी तो हम हैं, हमें इन नकली पाकिस्तानियों से हिसाब चुकाना है।"[६२] अल्ताफ हुसैन घृणा, प्रतिशोध की भावना, खून खराबे से इन्सान को आजाद करने की सलाह देता है। वर्तमान युग में सबसे बड़ी समस्या आतंकवाद की है। भारत अनेक वर्षों से आतंकवाद का शिकार है। आज आतंकवादियों के विध्वंसकारी हमलों के कारण जनजीवन डावाडोल गया है। आज की आतंकवाद की समस्या विश्व की राजनीतिक चेतना से जुड़ी हुई है। इसी समस्या की ओर कमलेश्वर लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करते हुए लिखते है-"तभी उत्तर-पूर्व से तड़तड़ाती एक गोली आयी। उल्फा उग्रवादियों ने दस्तक दी, चाय बागान से यह दस्तक आयी थी, तब तक सन १९८४ की विधवाएँ दस्तक देने लगी। दक्षिण से नक्सलपन्थियों ने दस्तक की बटाला बस काण्ड की लाशें चीखने लगश।"[६३] साम्राज्यवाद ही धार्मिक कट्टरता और अन्धराष्ट्रवाद को जन्म देता है। आतंकवाद की समस्या ने भारत में विकराल रूप धारण किया है।

आक्रमणकर्ताओं के द्वारा भारत को आतंकित करने की परम्परा पुरातन है। औरंगजेब के द्वारा भारत पर विभिन्न हमले कर यहाँ का जनजीवन तहस-नहस करने के अनेक उदा. मिलते हैं। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का नायक अदीब औरंगजेब के इल्जाम के पाठ पढ़ाते हुए उसे कहता है-"आलमगीर। तमाम इल्जाम तुम पर आयद हैं..सबसे बड़ा तो यह है कि तुम एक धर्मान्ध शहंशाह थे, कट्टर सुनी थी..इसीलिए तुमने दक्षिण की गोलकुंडा, बीजापूर, खानदेश, बरार और अहमदनगर के राज्यों के उन सुल्तानों को बर्बाद किया जो मुसलमान तो थे, पर सुन्नी नही शिया थे..और यह कि तुमने अपनी हिन्दु स्त्रियों को सताया, उसे तलवार के जोर पर मुसलमान बनाया, उनके त्यौहारों-उत्सवों पर प्रतिबन्ध लगाया, उनके मन्दिरों को तोड़ा.. ।"[६४] औरंगजेब धार्मिक आतंक के द्वारा लोगों को आतंकित करता है। धार्मिक आतंकवाद सबसे पहले धर्मभीरू लोगों को अपने चुंगुल में फँसता है, बाद में अपनी इच्छानुसार बलपूर्वक उसका प्रयोग करता है। कमलेश्वर ने इस्लाम और ईसाई धर्म के लोगों के द्वारा अन्य धर्मों पर किए गये अत्याचारों पर प्रकाश डालकर उसकी आलोचना की है। कारण स्पष्ट है, आतंकवाद मानवता विरोधी तत्व है। धर्म कौन सा भी हो, उसका इन्सानी संदेश एक ही होता है। कौन सा भी धर्म रक्तपात करने का संदेश नहीदेता, परतुं इन साम्राज्यवादी शक्तियों ने धर्म को अपने स्वार्थ के अनुरूप बदला और समस्त मानवी जीवन आतंकित किया है। इन साम्राज्यवादी शक्तियों ने लोगों को खुली साँस लेने पर भी पाबन्दी लगा दी है। इसीलिए कमलेश्वर ने इन धर्म के दलालों को अदीब के माध्यम से फटकारते हुए कहा हैं-"लोकतंत्रवादियों को यह नहीभूलना चाहिए कि चाहे जितनी भी नकारात्मक, घातक और मनुष्य विरोधी विचारधारा क्यों न हो, उसे खुली, निर्बांध और स्वतंत्र अभिव्यक्ति मिलनी चाहिए..अभिव्यक्ति की इस आजादी से ही इन निर्मम, विरोधी और घातक विचारधाराओं का स्खलन होगा, इसका शमन होगा, इसका शमन होगा, क्योंकि इनके पास अंधी उत्तेजना है, शक्ति नहश।"[६५] साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा धर्म को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसीं धर्मान्ध प्रवृत्तियों से सामूहिक हत्याकांण्ड या धर्म-परिवर्तन काण्ड कर समस्त मानवता के साथ विश्वासघात करते हुए साम्राज्यवादी ताकदें राजनीतिक सत्ता पर आरूढ़ हुई हैं। युगों से यह ध्वसंकारी प्रवृत्तियाँ जनमानस को आतंकित कर रहीं है।

कमलेश्वर ने संयुक्त राष्ट्रसंघ की कार्य प्रणाली पर भी अदीब के द्वारा निंदा की है। उनका मानना है कि यह संस्था स्वतंत्र संस्था न होकर शक्तिशाली देशों के हाथों की कठपुतली मात्र है। उन्होंने लिखा है-"एक ध्रुरवीय शक्ति के पक्ष में उन्होंने अपने नैतिक हथियार भी डाल दिये हैं, जो बड़ी उम्मीद से उन्हें सौंपे गये थे, इसी का नतीजा है, विभाजन और दुर्दान्त दमन का यह दौर अगर कोफी अन्नान गये हैं तो उन्हें याद दिलाओं कि आर्थिक संस्कृतियों के नाम पर जो युध्द चले और चल रहे हैं, वे हर देश और संस्कृति के विनाश के कारण बनते हैं।" मलेश्वर ने इतिहास के तथ्यों, सन्दर्भों का गहन अध्ययन कर राजसत्ता ने जो साजिश भरे कार्यक्रम तैयार किये, उसके राजनीतिक विषचक्र की ओर उन्होंने समाज का ध्यान आकृष्ट किया है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि, कमलेश्वरने मानवीय मूल्यों को बचाने का प्रामाणिक प्रयास प्रस्तुत उपन्यास में किया है। मानवीय मूल्यों का संरक्षण ही इस उपन्यास का प्रधान उद्देश्य है। उन्होंने वैश्विक चिन्ताओं को समस्त मानवतावादी तत्वों के साथ जोड़ दिया है। साम्राज्यवादी ताकदों के द्वारा धर्म की आड़ में आम निरापराध जनता का हत्याकाण्ड करनेवाले समस्त राजनीतिक प्रयासों का कमलेश्वर ने खुलकर विरोध किया है। उनका अदीब के अदालत

द्वारा संकिर्णता, कष्ट, उत्पीड़न, यातना, बेईमानी, मूल्यहीनता तथा वैश्विक आतंकवादी जैसी विनाशकारी प्रवृत्तियों का खण्डन कर तथा वैश्विक शान्ति का अमल कर पुन: विश्व मानवता के सम्बन्ध प्रस्थापित करने का प्रयास स्तुत्य हैं।

संदर्भ संकेत

१) कितने पाकिस्तान कमलेश्वर वही -पृ-८.
२) वही -पृ-४७.
३) वही -पृ-१५७.
४) वही -पृ-१६२.
५) वही -पृ-१६०.
६) वही -पृ-१७७.
७) वही -पृ-१६३.
८) सिक्का बदल गया-(सम्पादक) भूमिका- नरेन्द्र मोहन-पृ-१०